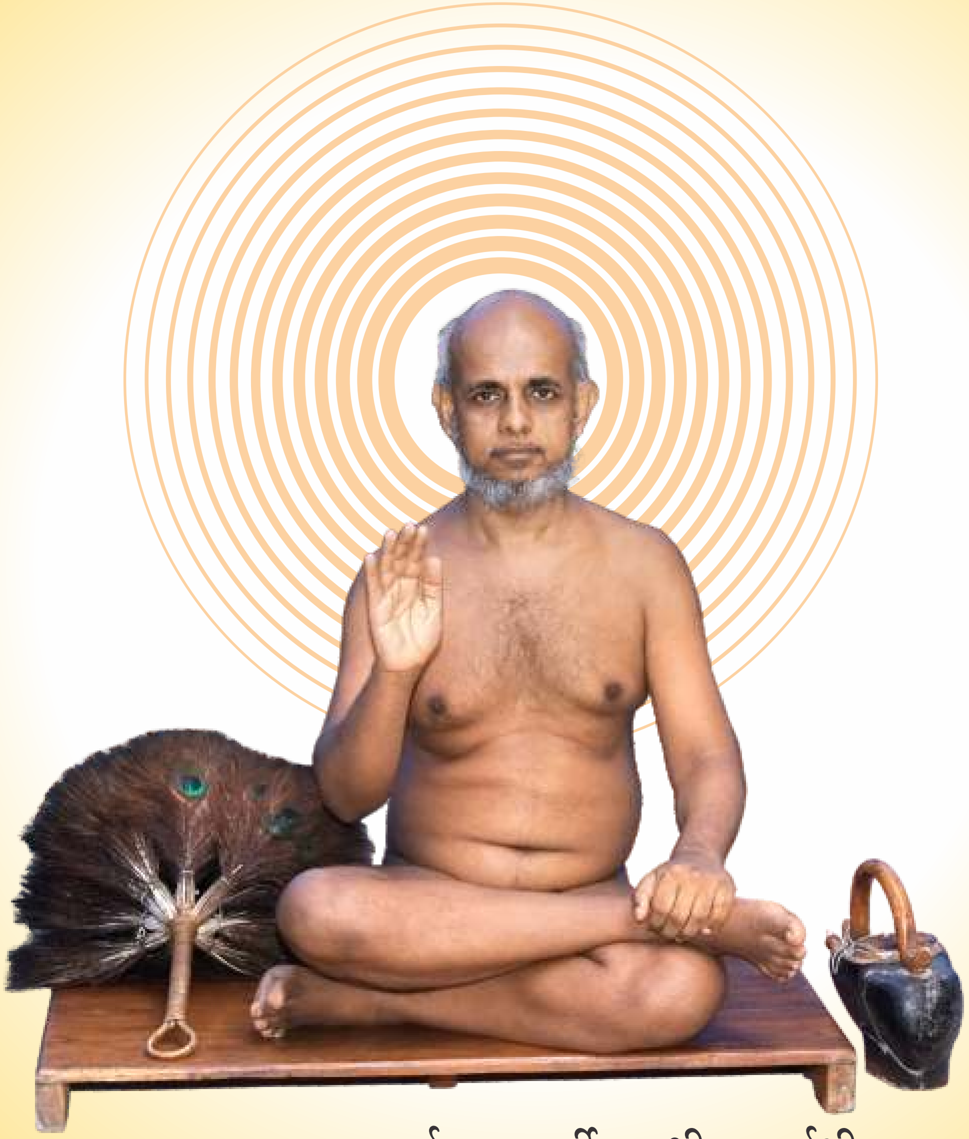

परम पूज्य तपश्चर्या–चक्रवर्ती पट्टाधीशाचार्यश्री

सुविधिसागर जी महाराज

के

50 वें जन्मदिवस के पावन अवसर पर

सुविधि–परिवार के द्वारा आयोजित

जिनवाणी-महोत्सव

सहस्रग्रन्थसंग्रह

* जन्मदिवस 19–03–1971 * मुनिदीक्षा–11–05–1989 * आचार्यपद– 20–06–2004

पट्टाधीशपद– 24–12–2010 (20–06–2004 को की गई उद्घोषणा के अनुसार)

परम पूज्य आचार्यश्री सन्मतिसागर जी महाराज के द्वारा की गई उद्घोषणाः–

हमारी समाधि के पश्चात् आपको इस संघ के संचालकपद पर नियुक्त करते हैं।

(अंकलीकर वाणी–जुलाई 2004) (अक्षयज्योति–अक्तूबर 2004)

विशद श्री सर्वदोषप्रायश्चित्त विधान

कृतिकार : परम पूज्य आचार्यश्री विशदसागर जी महाराज

प्राप्ति स्थान :
विशद साहित्य केन्द्र
श्री दिगम्बर जैन मन्दिर, कुआँ वाला,
जैनपुरी रेवाड़ी (हरियाणा)

(परम्परानायक)

परम पूज्य चारित्र–चक्रवर्ती,
आचार्यश्री आदिसागर जी महाराज
(अंकलीकर)

(द्वितीय पट्टाधीश)

परम पूज्य तीर्थभक्त–शिरोमणि,
आचार्यश्री महावीरकीर्ति जी महाराज

(तृतीय पट्टाधीश)

परम पूज्य सिद्धान्त–चक्रवर्ती,
आचार्यश्री सन्मतिसागर जी महाराज

(चतुर्थ पट्टाधीश)

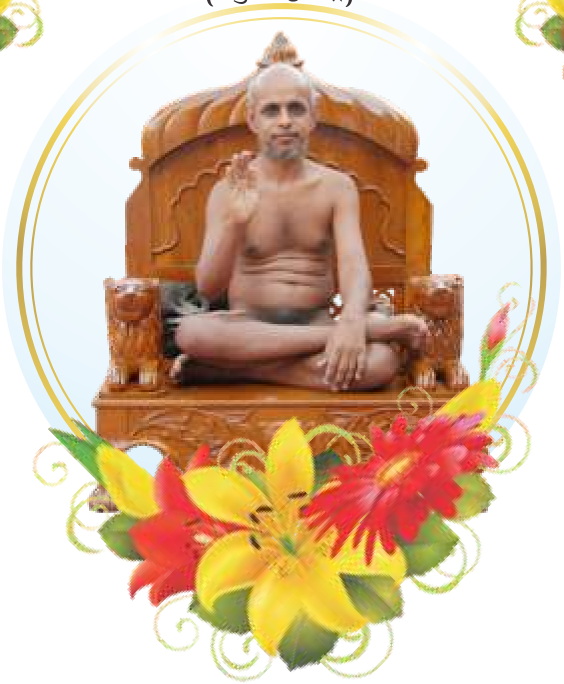

परम पूज्य तपश्चर्या–चक्रवर्ती, आचार्यश्री सुविधिसागर जी महाराज

दिगम्बर साधु निरन्तर पगविहार करते रहते हैं। ग्रन्थभण्डार को साथ में रख कर विहार करना अशक्यप्राय: होता है। फलत: उनको ग्रन्थों के सन्दर्भ देखने में असुविधा होती है। उनकी सुविधा के लिये इस कोश का निर्माण किया गया है। इस कोश के निर्माण में किसी भी प्रकार का व्यापारिक हेतु नहीं है।

आर्थिक दृष्टि से सम्पन्न श्रावकबन्धुओं से निवेदन है कि वे ग्रन्थ का विक्रय कर अध्ययन करने की परम्परा को कायम रखें।

मुखपृष्ठ पर हमने ग्रन्थकर्त्ता, अनुवादक, सम्पादक, प्रकाशक आदि के नाम दिये हैं। किसी संस्थान का कर्तुत्व हमने लुप्त नहीं किया है।

इस कोश के लिये आवश्यक ग्रन्थ हमें अनेक स्रोतों से प्राप्त हुये हैं। हम उन सभी का आभार मानते हैं।

सुविधि–परिवार

।। श्री वीतरागाय नमः ।।

श्री सर्वदोष प्रायश्चित्त विधान

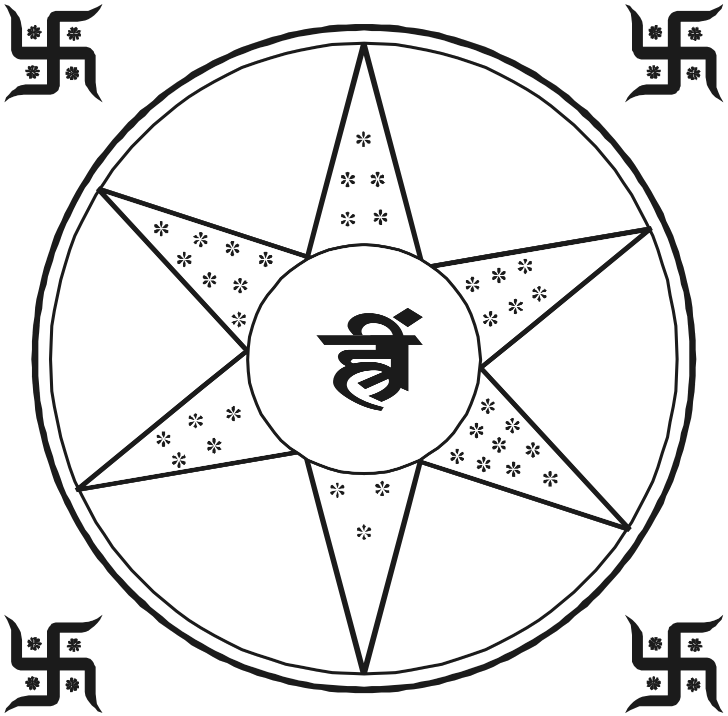

रचयिता : प.पू. आचार्य विशदसागरजी महाराज

कृति - श्री प्रभा चन्द्राचार्य कृत
श्री सर्वदोष प्रायश्चित्त विधान का अनुवाद

कृतिकार - प.पू. साहित्य रत्नाकर, क्षमामूर्ति
आचार्य श्री 108 विशदसागरजी महाराज

संस्करण - प्रथम, 2010 प्रतियाँ - 1000

संकलन - मुनि श्री 108 विशालसागरजी महाराज
सहयोग - सुखनन्दनजी

संपादन - ब्र. ज्योति दीदी (9829076085), आस्था, सपना दीदी

संयोजन - किरण, आरती दीदी ● मो.: 9829127533

प्राप्ति स्थल -
1. जैन सरोवर समिति, निर्मलकुमार गोधा,
2142, निर्मल निकुंज, रेडियो मार्केट, नेहरु बाजार,
मनिहारों का रास्ता, जयपुर मो.: 9414812008
फोन : 0141-2311551 (घर)
2. श्री 108 विशद सागर माध्यमिक विद्यालय बरौदिया कलाँ,
जिला-सागर (म.प्र.)
3. विवेक जैन, 2529, मालपुरा हाऊस,
मोतिसिंह भोमियों का रास्ता, जौहरी बाजार, जयपुर
फोन : 2503253, मो.: 9414054624
4. श्री राजेश जैन ठेकेदार, ए-107, बुध विहार, अलवर
मो.: 9414016566

पुनः प्रकाश हेतु - 21/- रु.

अर्थ सौजन्य -
* श्री गणेशलाल योगेशकुमार जैन (बोहरा), नया गाँव
* श्री जिनेन्द्रकुमार जैन, नया गाँव
* श्री प्रेमचन्द नरेन्द्रकुमार जैन, नया गाँव (बूँदी)

मुद्रक : राजू ग्राफिक आर्ट (संदीप शाह), जयपुर ● फोन : 2313339, मो.: 9829050791

अंतस् की भावना

''जे त्रिभुवन में जीव अनन्त, सुख चाहें दुःख तै भयवन्त।''

तीनों लोकों में अनंतानन्त जीव हैं जो सुख चाहते हैं, दुःख से घबराते हैं। चारों गतियों में दुःख का कारण चूँकि जीव की अपनी अज्ञानता व मोह है। अतः हम अज्ञानता या मोह से बचें तो संसार के दुःखों से पार हो सकते हैं। इसके लिए एकमात्र उपाय है– **'जिनेन्द्र पूजन भक्ति'**। अर्हंत आदि के गुणों में अनुराग करना **'भक्ति'** है। जिनेन्द्र पूजन गृहस्थ के षट्आवश्यक कार्यों में सर्वप्रथम है। पूजन दो प्रकार की होती है– **1. द्रव्यपूजा, 2. भावपूजा**। जल, गंध, अक्षत, पुष्प आदि अष्टद्रव्य से जो पूजा की जाती है वह द्रव्यपूजा और एकाग्रचित्त होकर अन्य समस्त विकल्प छोड़कर अरहंत के प्रतिबिम्ब का ध्यान करना सो भावपूजा है।

'रयणसार' में आचार्य श्री कुन्दकुन्द स्वामी ने लिखा है–

पूयफलेण तिलोए, सुर पुज्जो हवइ सुद्धमणो।
दाण फलेण तिलोए, सार सुहं भुंजदे णियदं।।

भावार्थहह जो शुद्ध भाव से श्रद्धापूर्वक पूजा करता है, वह पूजा के फल से त्रिलोक का आधीश हो इन्द्रों से पूजित होता है और सुपात्रों में चार प्रकार के दान के फल से त्रिलोक में सारभूत मोक्ष सुखों को भोगता है।

उस सुख के आलम्बन हेतु **परम पूज्य गुरुवर आचार्यश्री विशदसागरजी महाराज** ने **'श्री सर्वदोष प्रायश्चित्त विधान'** की रचना कर हम सभी भव्य जीवों को कल्याण का मार्ग प्रशस्त किया है। आचार्यश्री की रचना जन–जन को लाभकारी होवे और हम लोगों को इसी प्रकार पूजन का लाभ होता रहे जिससे हम सभी लोग पुण्य का संचय कर सकें तथा हमारा जीवन ऊर्ध्वगामी बन सके।

आचार्यश्री के चरणों में अंतिम भावना–

जिनका दर्शन भवि जीवों में, सत् श्रद्धान जगाता है।
उपदेशामृत जिनका जग में, सद्धर्म की राह दिखाता है।
उन विशद सिन्धु के श्री चरणों में, सादर शीश झुकाते हैं।
हम चले आपके कदमों पर, यह विशद भावना भाते हैं।।

साहित्य रत्नाकर, क्षमामूर्ति, कविहृदय आचार्य भगवन् गुरुवर श्री विशदसागरजी महाराज के श्री चरणों में कोटिशः नमोऽस्तु–3

– ब्र. दीदी

श्री देव-शास्त्र-गुरु समुच्चय पूजन

स्थापना

देव शास्त्र गुरु के चरणों हम, सादर शीष झुकाते हैं।
कृत्रिमाकृत्रिम चैत्य–चैत्यालय, सिद्ध प्रभु को ध्याते हैं।
श्री बीस जिनेन्द्र विदेहों के, अरु सिद्ध क्षेत्र जग के सारे।
हम विशद भाव से गुण गाते, ये मंगलमय तारण हारे।
हमने प्रमुदित शुभ भावों से, तुमको हे नाथ ! पुकारा है।
मम् डूब रही भव नौका को, जग में वश एक सहारा है।
हे करुणा कर ! करुणा करके, भव सागर से अब पार करो।
मम् हृदय कमल में आ तिष्ठो, बस इतना सा उपकार करो।।

ॐ ह्रीं श्री देव शास्त्र गुरु कृत्रिमाकृत्रिम जिन चैत्य–चैत्यालय अनन्तानन्त सिद्ध परमेष्ठी विद्यमान विंशति तीर्थंकर सिद्ध क्षेत्र समूह अत्रावतरावतर संवौषट् आह्वानन।

ॐ ह्रीं श्री देव शास्त्र गुरु कृत्रिमाकृत्रिम जिन चैत्य–चैत्यालय अनन्तानन्त सिद्ध परमेष्ठी विद्यमान विंशति तीर्थंकर सिद्ध क्षेत्र समूह अत्र तिष्ठ तिष्ठ ठः ठः स्थापनं।

ॐ ह्रीं श्री देव शास्त्र गुरु कृत्रिमाकृत्रिम जिन चैत्य–चैत्यालय अनन्तानन्त सिद्ध परमेष्ठी विद्यमान विंशति तीर्थंकर सिद्ध क्षेत्र समूह अत्र मम् सन्निहितो भव भव वषट् सन्निधिकरणम्।

अष्टक

हम प्रासुक जल लेकर आये, निज अन्तर्मन निर्मल करने।
अपने अन्तर के भावों को, शुभ सरल भावना से भरने।।
श्री देव शास्त्र गुरु सिद्ध प्रभु, जिन चैत्य–चैत्यालय को ध्यायें।
हम विद्यमान श्री बीस तीर्थंकर, सिद्ध क्षेत्र के गुण गायें।।1।।

ॐ ह्रीं श्री देव शास्त्र गुरु कृत्रिमाकृत्रिम जिन चैत्य–चैत्यालय अनन्तानन्त सिद्ध परमेष्ठी विद्यमान विंशति तीर्थंकर सिद्ध क्षेत्र समूह जन्म जरा मृत्यु विनाशनाय जलं निर्वपामीति स्वाहा।

हे नाथ ! शरण में आये हैं, भव के सन्ताप सताए हैं।
यह परम सुगन्धित चंदन ले, प्रभु चरण शरण में आये हैं।।
श्री देव शास्त्र गुरु सिद्ध प्रभु, जिन चैत्य–चैत्यालय को ध्यायें।
हम विद्यमान श्री बीस तीर्थंकर, सिद्ध क्षेत्र के गुण गायें।।2।।

ॐ ह्रीं श्री देव शास्त्र गुरु कृत्रिमाकृत्रिम जिन चैत्य–चैत्यालय अनन्तानन्त सिद्ध परमेष्ठी विद्यमान विंशति तीर्थंकर सिद्ध क्षेत्र समूह भव ताप विनाशनाय चंदनं निर्वपामीति स्वाहा।

हम अक्षय निधि को भूल रहे, प्रभु अक्षय निधी प्रदान करो।
यह अक्षत लाए चरणों में, प्रभु अक्षय निधि का दान करो।।
श्री देव शास्त्र गुरु सिद्ध प्रभु, जिन चैत्य-चैत्यालय को ध्यायें।
हम विद्यमान श्री बीस तीर्थंकर, सिद्ध क्षेत्र के गुण गायें।।3।।

ॐ ह्रीं श्री देव शास्त्र गुरु कृत्रिमाकृत्रिम जिन चैत्य-चैत्यालय अनन्तानन्त सिद्ध परमेष्ठी विद्यमान विंशति तीर्थंकर सिद्ध क्षेत्र समूह अक्षय पद प्राप्ताय अक्षतान् निर्वपामीति स्वाहा।

यद्यपि पंकज की शोभा भी, मानस मधुकर को हर्षाए।
अब काम कलंक नशाने को, मनहर कुसुमांजलि ले आए।।
श्री देव शास्त्र गुरु सिद्ध प्रभु, जिन चैत्य-चैत्यालय को ध्यायें।
हम विद्यमान श्री बीस तीर्थंकर, सिद्ध क्षेत्र के गुण गायें ।।4।।

ॐ ह्रीं श्री देव शास्त्र गुरु कृत्रिमाकृत्रिम जिन चैत्य-चैत्यालय अनन्तानन्त सिद्ध परमेष्ठी विद्यमान विंशति तीर्थंकर सिद्ध क्षेत्र समूह कामबाण विध्वंशनाय पुष्पं निर्वपामीति स्वाहा।

ये षट् रस व्यंजन नाथ हमें, सन्तुष्ट पूर्ण न कर पाये।
चेतन की क्षुधा मिटाने को, नैवेद्य चरण में हम लाए।।
श्री देव शास्त्र गुरु सिद्ध प्रभु, जिन चैत्य-चैत्यालय को ध्यायें।
हम विद्यमान श्री बीस तीर्थंकर, सिद्ध क्षेत्र के गुण गायें।।5।।

ॐ ह्रीं श्री देव शास्त्र गुरु कृत्रिमाकृत्रिम जिन चैत्य-चैत्यालय अनन्तानन्त सिद्ध परमेष्ठी विद्यमान विंशति तीर्थंकर सिद्ध क्षेत्र समूह क्षुधा रोग विनाशनाय नैवेद्यं निर्वपामीति स्वाहा।

दीपक के विविध समूहों से, अज्ञान तिमिर न मिट पाए।
अब मोह तिमिर के नाश हेतु, हम दीप जलाकर ले आए।।
श्री देव शास्त्र गुरु सिद्ध प्रभु, जिन चैत्य-चैत्यालय को ध्यायें।
हम विद्यमान श्री बीस तीर्थंकर, सिद्ध क्षेत्र के गुण गायें।।6।।

ॐ ह्रीं श्री देव शास्त्र गुरु कृत्रिमाकृत्रिम जिन चैत्य-चैत्यालय अनन्तानन्त सिद्ध परमेष्ठी विद्यमान विंशति तीर्थंकर सिद्ध क्षेत्र समूह मोहान्धकार विनाशनाय दीपं निर्वपामीति स्वाहा।

ये परम सुगंधित धूप प्रभु, चेतन के गुण न महकाए।
अब अष्ट कर्म के नाश हेतु, हम धूप जलाने को आए।।
श्री देव शास्त्र गुरु सिद्ध प्रभु, जिन चैत्य-चैत्यालय को ध्यायें।
हम विद्यमान श्री बीस तीर्थंकर, सिद्ध क्षेत्र के गुण गायें।।7।।

ॐ ह्रीं श्री देव शास्त्र गुरु कृत्रिमाकृत्रिम जिन चैत्य-चैत्यालय अनन्तानन्त सिद्ध परमेष्ठी विद्यमान विंशति तीर्थंकर सिद्ध क्षेत्र समूह अष्ट कर्म दहनाय धूपं निर्वपामीति स्वाहा।

जीवन तरु में फल खाए कई, लेकिन वे सब निष्फल पाए।
अब विशद मोक्ष फल पाने को, श्री चरणों में श्री फल लाए।।
श्री देव शास्त्र गुरु सिद्ध प्रभु, जिन चैत्य-चैत्यालय को ध्यायें।
हम विद्यमान श्री बीस तीर्थंकर, सिद्ध क्षेत्र के गुण गायें।।8।।

ॐ ह्रीं श्री देव शास्त्र गुरु कृत्रिमाकृत्रिम जिन चैत्य-चैत्यालय अनन्तानन्त सिद्ध परमेष्ठी विद्यमान विंशति तीर्थंकर सिद्ध क्षेत्र समूह मोक्ष फल प्राप्ताय फलं निर्वपामीति स्वाहा।

हम अष्ट कर्म आवरणों के, आतंक से बहुत सताए हैं।
वसु कर्मों का हो नाश प्रभु, वसु द्रव्य संजोकर लाए हैं।।
श्री देव शास्त्र गुरु सिद्ध प्रभु, जिन चैत्य-चैत्यालय को ध्यायें।
हम विद्यमान श्री बीस तीर्थंकर, सिद्ध क्षेत्र के गुण गायें।।9।।

ॐ ह्रीं श्री देव शास्त्र गुरु कृत्रिमाकृत्रिम जिन चैत्य-चैत्यालय अनन्तानन्त सिद्ध परमेष्ठी विद्यमान विंशति तीर्थंकर सिद्ध क्षेत्र समूह अनर्घ पद प्राप्ताय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

जयमाला

श्री देव शास्त्र गुरु मंगलमय हैं, अरु मंगल श्री सिद्ध महन्त।
बीस विदेह के जिनवर मंगल, मंगलमय हैं तीर्थ अनन्त।।

छन्द तोटक

जय अरि नाशक अरिहंत जिनं, श्री जिनवर छियालिस मूल गुणं।
जय महा मदन मद मान हनं, भवि भ्रमर सरोजन कुंज वनं।।
जय कर्म चतुष्टय चूर करं, दृग ज्ञान वीर्य सुख नन्त वरं।
जय मोह महारिपु नाशकरं, जय केवल ज्ञान प्रकाश करं।।1 ।।
जय कृत्रिमाकृत्रिम चैत्य जिनं, जय अकृत्रिम शुभ चैत्य वनं।
जय ऊर्ध्व अधो के जिन चैत्यं, इनको हम ध्याते हैं नित्यं।।
जय स्वर्ग लोक के सर्व देव, जय भावन व्यन्तर ज्योतिषेव।
जय भाव सहित पूजे सु एव, हम पूज रहे जिन को स्वयमेव।।2।।
श्री जिनवाणी ओंकार रूप, शुभ मंगलमय पावन अनूप।
जो अनेकान्तमय गुणधारी, अरु स्याद्वाद शैली प्यारी।।

है सम्यक् ज्ञान प्रमाण युक्त, एकान्तवाद से पूर्ण मुक्त।
जो नयावली युत सजल विमल, श्री जैनागम है पूर्ण अमल।। 3।।
जय रत्नत्रय युत गुरूवरं, जय ज्ञान दिवाकर सूरि परं।
जय गुप्ति समीति शील धरं, जय शिष्य अनुग्रह पूर्ण करं।।
गुरु पञ्चाचार के धारी हो, तुम जग-जन के उपकारी हो।
गुरु आतम ब्रह्म बिहारी हो, तुम मोह रहित अविकारी हो।।4।।
जय सर्व कर्म विध्वंश करं, जय सिद्ध शिला पे वास करं।
जिनके प्रगटे है आठ गुणं, जय द्रव्य भाव नो कर्महनं।।
जय नित्य निरंजन विमल अमल, जय लीन सुखामृत अटल अचल।
जय शुद्ध बुद्ध अविकार परं, जय चित् चैतन्य सु देह हरं।।5।।
जय विद्यमान जिनराज परं, सीमंधर आदी ज्ञान करं।
जिन कोटि पूर्व सब आयु वरं, जिन धनुष पांच सौ देह परं।।
जो पंच विदेहों में राजे, जय बीस जिनेश्वर सुख साजे।
जिनको शत् इन्द्र सदा ध्यावें, उनका यश मंगलमय गावें।।6।।
जय अष्टापद आदीश जिनं, जय उर्जयन्त श्री नेमि जिनं।
जय वासुपूज्य चम्पापुर जी, श्री वीर प्रभु पावापुरजी।।
श्री बीस जिनेश सम्मेदगिरी, अरु सिद्ध क्षेत्र भूमि सगरी।
इनकी रज को सिर नावत हैं, इनका यश मंगल गावत हैं।।7।।

(आर्या छन्द)

पूर्वाचार्य कथित देवों को, सम्यक् वन्दन करें त्रिकाल।
पञ्च गुरू जिन धर्म चैत्य श्रुत, चैत्यालय को है नत भाल।।

ॐ ह्रीं श्री देव शास्त्र गुरु कृत्रिमाकृत्रिम जिन चैत्य-चैत्यालय अनन्तानन्त सिद्ध परमेष्ठी विद्यमान विंशति तीर्थंकर सिद्ध क्षेत्र समूह अनर्घ पद प्राप्तये पूर्णार्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

दोहा- तीन लोक तिहुँ काल के, नमू सर्व अरहंत।
अष्ट द्रव्य से पूजकर, पाऊँ भव का अन्त।।

ॐ ह्रीं श्री त्रिलोक एवं त्रिकाल वर्ती तीर्थंकर जिनेन्द्रेभ्यो: अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

पुष्पांजलिं क्षिपेत् (कायोत्सर्गं कुरु...)

सर्वदोष प्रायश्चित्त विधान

'स्तवन'

जिनकी वाणी दर्पण सम शुभ, सुखकर है जो मंगलकार।
सर्व पाप की नाशक अनुपम, सर्व जगत् में अपरम्पार।।
भक्ति से चरणों में आकर, प्राणी पाते हैं उत्कर्ष।
लोह स्वर्ण बन जाता है ज्यों, पार्श्व मणि का कर स्पर्श।।
जिस वाणी से प्रकट हुए हैं, द्रव्य तत्त्व अरु अस्तिकाय।
नव पदार्थ का कथन किए हैं, केवलज्ञानी श्री जिनराय।।
सुर नर गणधर से वंदित हैं, विशद लोक में पूज्य महान।
जिनवाणी जिन पूज्य लोक में, जिन का हम करते गुणगान।।
स्याद्वाद रवि से आलोकित, सुर नर पूजित लोक महान।
सन्देहादि दोष रहित शुभ, सर्व अर्थ संदेश प्रधान।।
याथातथ्य अजेय सुशासन, आप्त कथित है हितकारी।
कोटि प्रभा भाषित जैनागम, इस जग में मंगलकारी।।
जिनमुख से निःश्रित होती है, ॐकारमय जिनवाणी।
लोकालोक प्रकाशक पावन, भवि जीवों की कल्याणी।।
द्वादशांगमय वाणी अनुपम, सप्त भंग मय रही महान।
सम्यक्दृष्टि प्राणी हैं वह, जो करते इसका श्रद्धान।।

अथ यंत्रोद्धारणक्रम

ह्रीं मध्य में पञ्च व्रतों के, साथ वलय शुभ रचे महान।
बाह्य प्रवचना अष्ट दलों में, यंत्र मातृका का निर्माण।।
बीस महापत्रों में विधि से, करना सबका स्थापन।
निर्मल भावों से विधिवत् शुभ, यन्त्र राज की हो पूजन।।

।। यंत्रे पुष्पांजलिं क्षिपेत् ।।

सर्वदोष प्रायश्चित्त विधान पूजन

स्थापना

पञ्च महाव्रत पञ्च समिति, तीन गुप्तियों के स्थान।
अस्तिकाय भी पञ्च बताए, जीव निकाय छह रहे प्रधान।।
नव पदार्थ आगम में वर्णित, रत्नत्रय का है वर्णन।
जो प्रमाद से दोष हुए हों, मिथ्या हों मेरे भगवन्।।
दोष रहित हो मेरा जीवन, जिन गुण का करते आह्वान।
विशद हृदय के सिंहासन पर, आ तिष्ठों मेरे भगवान।।

ॐ ह्रीं अ सि आ उ सा त्रयस्त्रिंशदत्यासादन त्यागानुष्ठित प्रोषधोद्योतनः अत्र अवतर-अवतर संवौषट् आह्वाननं।

ॐ ह्रीं अ सि आ उ सा त्रयस्त्रिंशदत्यासादन त्यागानुष्ठित प्रोषधोद्योतनः अत्र तिष्ठ-तिष्ठ ठः ठः स्थापनं।

ॐ ह्रीं अ सि आ उ सा त्रयस्त्रिंशदत्यासादन त्यागानुष्ठित प्रोषधोद्योतनः अत्र मम सन्निहितो भव-भव वषट् सन्निधिकरणम्।

(जोगीरासा)

कनक कुम्भ में यमुना का जल, प्रासुक करके लाए हैं।
जिन तीर्थंकर के चरणों में, आज चढ़ाने आए हैं।।
जन्म-जरा-मृत्यु रोगों को, यहाँ नशाने आए हैं।
सर्व पाप के नाश हेतु हम, पूजा आज रचाए हैं।।1।।

ॐ ह्रीं अ सि आ उ सा त्रयस्त्रिंशदत्यासादन त्यागानुष्ठित प्रोषधोद्योतनेभ्यो जन्म-जरा-मृत्युविनाशनाय जलं निर्वपामीति स्वाहा।

मलयगिरि का चंदन अनुपम, केसर संग घिसाए हैं।
अलि गुंजार करें प्रमुदित हो, दशों दिशा महकाए हैं।।

भव आताप मिटाने हेतु, स्वर्ण पात्र में लाए हैं।
सर्व पाप के नाश हेतु हम, पूजा आज रचाए हैं।।2।।

ॐ ह्रीं अ सि आ उ सा त्रयस्त्रिंशदत्यासादन त्यागानुष्ठित प्रोषधोद्योतनेभ्यो संसारताप विनाशनाय चंदनं निर्वपामीति स्वाहा।

अक्षत पुञ्ज धवल शुभ उज्ज्वल, कनक कुम्भ में लाए हैं।
अक्षय पद पाने को अनुपम, चरण शरण में आए हैं।।
अक्षय निधी प्राप्त हो हमको, विशद भावना भाए हैं।
सर्व पाप के नाश हेतु हम, पूजा आज रचाए हैं।।3।।

ॐ ह्रीं अ सि आ उ सा त्रयस्त्रिंशदत्यासादन त्यागानुष्ठित प्रोषधोद्योतनेभ्यो अक्षयपद प्राप्ताय अक्षतान् निर्वपामीति स्वाहा।

कमल केतकी कुन्द सुचम्पा, कुसुम अनेकों लाए हैं।
कुमुद वृन्द शुभ चम्पा-चमेली, कंचन थाल भराए हैं।।
काम कलंक विनाशन हेतु, प्रभु के चरण चढ़ाए हैं।
सर्व पाप के नाश हेतु हम, पूजा आज रचाए हैं।।4।।

ॐ ह्रीं अ सि आ उ सा त्रयस्त्रिंशदत्यासादन त्यागानुष्ठित प्रोषधोद्योतनेभ्यो कामबाण विनाशनाय पुष्पं निर्वपामीति स्वाहा।

दुग्ध दधीच्छु के शुभ खज्जक, मोदक वटक बनाए हैं।
पायस घेवर घी से पूरित, जिनपद श्रेष्ठ चढ़ाए हैं।।
क्षुधा रोग के नाश हेतु हम, अर्चा कर हर्षाए हैं।
सर्व पाप के नाश हेतु हम, पूजा आज रचाए हैं।।5।।

ॐ ह्रीं अ सि आ उ सा त्रयस्त्रिंशदत्यासादन त्यागानुष्ठित प्रोषधोद्योतनेभ्यो क्षुधारोग विनाशनाय नैवेद्यं निर्वपामीति स्वाहा।

रत्न सुसज्जित घृत के दीपक, मूंगा से सजवाए हैं।
नयनों को सन्तोष दिलाते, जगमग जलते लाए हैं।।
मोह तिमिर के नाशक अनुपम, अर्पित कर गुण गाए हैं।
सर्व पाप के नाश हेतु हम, पूजा आज रचाए हैं।।6।।

ॐ ह्रीं अ सि आ उ सा त्रयस्त्रिंशदत्यासादन त्यागानुष्ठित प्रोषधोद्योतनेभ्यो मोहांधकार विनाशनाय दीपं निर्वपामीति स्वाहा।

अगर तगर का चन्दन लेकर, दश विध गंध बनाए हैं।
धूप जलाकर के अग्नि में, दशों दिशा महकाए हैं।।
अष्ट कर्म के दहन हेतु हम, जिनपद ढ़ोक लगाए हैं।
सर्व पाप के नाश हेतु हम, पूजा आज रचाए हैं।।7।।

ॐ ह्रीं अ सि आ उ सा त्रयस्त्रिंशदत्यासादन त्यागानुष्ठित प्रोषधोद्योतनेभ्यो अष्टकर्म दहनाय धूपं निर्वपामीति स्वाहा।

दाड़िम पनस पूँगीफल केला, कंचन थाल भराए हैं।
मधुर सुरस से पूरित फल यह, यहाँ चढ़ाने लाए हैं।।
मोक्ष महाफल पाने को हम, चरण शरण में आए हैं।
सर्व पाप के नाश हेतु हम, पूजा आज रचाए हैं।।8।।

ॐ ह्रीं अ सि आ उ सा त्रयस्त्रिंशदत्यासादन त्यागानुष्ठित प्रोषधोद्योतनेभ्यो मोक्षफल प्राप्ताय फलं निर्वपामीति स्वाहा।

जल चंदन अक्षत ले अनुपम, पुष्प चरु शुभ लाए हैं।
दीप धूप फल से यह पावन, अर्घ्य बनाकर लाए हैं।।
देव तीर्थ नायक जिनवर के, हर्ष-हर्ष गुण गाए हैं।
सर्व पाप के नाश हेतु हम, पूजा आज रचाए हैं।।9।।

ॐ ह्रीं अ सि आ उ सा त्रयस्त्रिंशदत्यासादन त्यागानुष्ठित प्रोषधोद्योतनेभ्यो अनर्घ्यपद प्राप्ताय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

दोहा- प्राणी से अज्ञानवश, होते दोष अनेक।
दोष रहित हों जीव सब, यही भावना एक।।

(शान्तये शांतिधारा)

दोहा- श्रद्धा के शुभ पुष्प यह, अर्पित हैं भगवान।
मुक्ति हो संसार से, पाना पद निर्वाण।।

(पुष्पाञ्जलिं क्षिपेत्)

अथ प्रत्येक पूजा

प्रभाचन्द्र भट्टारक कृत शुभ, प्रतिक्रमण में तैंतिस दोष।
अत्यासादन का विवरण यह, किया गया होने निर्दोष।।
पञ्च महाव्रत समिति गुप्तियाँ, अस्तिकाय छह जीव निकाय।
नव पदार्थ यह हैं आसादना, तैंतिस भेद कहे जिनराय।।

(मण्डलस्योपरि पुष्पाञ्जलिं क्षिपेत्)

(उपरोक्त गाथा (छन्द) के आधार पर पूजा विधान जानना चाहिए)

(चौपाई)

छह निकाय के जीव बताए, मन वच तन से उन्हें बचाए।
परम अहिंसा व्रत का धारी, आयुकाल पाले अविकारी।।1।।

ॐ ह्रीं अहिंसा महाव्रतस्यात्यासादनत्यागानुष्ठित प्रोषधोद्योतनेभ्यो अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

सत्य वचन बोलें हितकारी, महाव्रती होते अनगारी।
सत्य महाव्रत यही बताया, जैनागम में ऐसा गाया।।2।।

ॐ ह्रीं सत्य महाव्रतस्यात्यासादनत्यागानुष्ठित प्रोषधोद्योतनेभ्यो अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

हीनाधिक वस्तु न देवे, जिन आज्ञा के कुछ न लेवे।
व्रत अचौर्य धारी कहलावे, जिन भक्ति कर दोष नसावे।।3।।

ॐ ह्रीं अचौर्य महाव्रतस्यात्यासादनत्यागानुष्ठित प्रोषधोद्योतनेभ्यो अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

स्वपर अंग में राग न धारे, ब्रह्मचर्य व्रत पूर्ण सम्हारे।
स्त्री में न प्रीति लगावे, संयम द्वारा कर्म नसावे।।4।।

ॐ ह्रीं ब्रह्मचर्य महाव्रतस्यात्यासादनत्यागानुष्ठित प्रोषधोद्योतनेभ्यो अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

बाह्यभ्यंतर परिग्रह त्यागे, आकिञ्चन में ही नित लागे।
परम अपरिग्रह व्रत को धारे, नव कोटि से राग निवारे।।5।।

ॐ ह्रीं अपरिग्रह महाव्रतस्यात्यासादनत्यागानुष्ठित प्रोषधोद्योतनेभ्यो अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

परम अहिंसा सत्य महाव्रत, अरु अचौर्य व्रत को उर धार।
ब्रह्मचर्य व्रत और अपरिग्रह, धारण करके मुनि अनगार।।
अत्यासादन दोष नशाकर, करते निज आतम का ध्यान।
सर्व कर्म का नाश करें फिर, अनुक्रम से पावे निर्वाण।।6।।

ॐ ह्रीं अहिंसादि महाव्रतस्यात्यासादनत्यागानुष्ठित प्रोषधोद्योतनेभ्यो अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

(छन्द-जोगीरासा)

नयन से दिन में देख यथावत, भूमि दण्ड प्रमाण।
ईर्या समिति तज प्रमाद नर, करें स्व-पर कल्याण।।
दोष नशाकर अत्यासादन, पालें पञ्चाचार।
प्रकट करें निज गुण की निधियाँ, होकर के अविकार।।7।।

ॐ ह्रीं ईर्यासमितिरत्यासादनत्यागानुष्ठित प्रोषधोद्योतनेभ्यो अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

हित-मित-प्रिय वचन कहते हैं, बोलें शब्द सम्हार।
भाषा समिति प्रयत्नकर पालें, मन के दोष निवार।।
दोष नशाकर अत्यासादन, पालें पञ्चाचार।
प्रकट करें निज गुण की निधियाँ, होकर के अविकार।।8।।

ॐ ह्रीं भाषासमितिरत्यासादनत्यागानुष्ठित प्रोषधोद्योतनेभ्यो अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

अन्नादनोत्पादन आदि, छियालिस दोष निवार।
ध्यान सिद्धि के हेतु भोजन, लेते मुनि अनगार।।

दोष नशाकर अत्यासादन, पालें पञ्चाचार।
प्रकट करें निज गुण की निधियाँ, होकर के अविकार।।9।।

ॐ ह्रीं एषणासमितिरत्यासादनत्यागानुष्ठित प्रोषधोद्योतनेभ्यो अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

वस्तु के आदान निक्षेप में, रखते यत्नाचार।
देखभाल करके प्रमार्जन, समिति धरे मनहार।।
दोष नशाकर अत्यासादन, पालें पञ्चाचार।
प्रकट करें निज गुण की निधियाँ, होकर के अविकार।।10।।

ॐ ह्रीं आदाननिक्षेपणासमितिरत्यासादनत्यागानुष्ठित प्रोषधोद्योतनेभ्यो अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

एकान्त ठोस निर्जन्तुक भू में, मल का करे निहार।
समिति कही व्युत्सर्ग जिनेश्वर, जीवों के हितकार।।
दोष नशाकर अत्यासादन, पालें पञ्चाचार।
प्रकट करें निज गुण की निधियाँ, होकर के अविकार।।11।।

ॐ ह्रीं व्युत्सर्गसमितिरत्यासादनत्यागानुष्ठित प्रोषधोद्योतनेभ्यो अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

ईर्या भाषा ऐषणा समिति, में कर यत्नाचार।
आदान निक्षेपण अरु व्यत्सर्ग यह, पाले योग सम्हार।।
दोष नशाकर अत्यासादन, पालें पञ्चाचार।
प्रकट करें निज गुण की निधियाँ, होकर के अविकार।।12।।

ॐ ह्रीं ईर्यादिपंचसमितिरत्यासादनत्यागानुष्ठित प्रोषधोद्योतनेभ्यो अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

(तर्ज- नन्दीश्वर पूजा.....)

हम रागादि के भाव, दूषण नाश करें।
प्रभु धार समाधि भाव, निज में वास करें।।
हो मनोगुप्ति का लाभ, चरणों में आए।
यह अष्ट द्रव्य का अर्घ्य, चढ़ाने हम लाए।।13।।

ॐ ह्रीं मनोगुप्तिरत्यासादनत्यागानुष्ठित प्रोषधोद्योतनेभ्यो अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

तज कर दुर्नय के शब्द, वचन को गुप्त करें।
चेतन में करके वास, सारे दोष हरें।।
हो वचनगुप्ति का लाभ, चरणों में आए।
यह अष्ट द्रव्य का अर्घ्य, चढ़ाने हम लाए।।14।।

ॐ ह्रीं वचोगुप्तिरत्यासादनत्यागानुष्ठित प्रोषधोद्योतनेभ्यो अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

तन की चेष्टा का त्याग, स्थिर आसन हो।
हो निज स्वभाव में वास, निज पर शासन हो।।
हो कायगुप्ति का लाभ, चरणों में आए।
यह अष्ट द्रव्य का अर्घ्य, चढ़ाने हम लाए।।15।।

ॐ ह्रीं कायगुप्तिरत्यासादनत्यागानुष्ठित प्रोषधोद्योतनेभ्यो अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

मन गुप्ति में मन का गोपन, वचन गुप्ति में शब्द निरोध।
कायगुप्ति में काय रोधकर, प्राणी पावें आतम बोध।।
यही भावना भाते हैं हम, निज स्वभाव में होय रमण।
वीतराग अविकारी बनकर, सब दोषों का करें वमन।।16।।

ॐ ह्रीं प्रवचनमातृकस्यात्यासादनत्यागानुष्ठित प्रोषधोद्योतनेभ्यो अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

बहु प्रदेशमय काय प्रचयवत, सत् स्वरूप जीवास्तिकाय।
निज स्वभाव में निज के गुण से, सदा स्वयं स्थिरता

पाय।।
शंकादि दोषों के कारण, हुआ यदि हो अश्रद्धान।
मिथ्या हो वह दोष पूर्णतः, हृदय जगे मम सम्यक् ज्ञान।।17।।

ॐ ह्रीं जीवास्तिकायात्यासादनत्यागानुष्ठित प्रोषधोद्योतनेभ्यो अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

हो स्पर्श गंध रस रूपी, पुद्गल अणु स्कंध स्वरूप।
अस्तिकाय है चक्षु अचाक्षुष, सर्व लोक में दोनों रूप।।
शंकादि दोषों के कारण, हुआ यदि हो अश्रद्धान।
मिथ्या हो वह दोष पूर्णतः, हृदय जगे मम सम्यक् ज्ञान।।18।।

ॐ ह्रीं पुद्गलास्तिकायात्यासादनत्यागानुष्ठित प्रोषधोद्योतनेभ्यो अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

निज में स्थिर धर्मास्तिकाय है, फिर भी करता गति प्रदान।
उदासीन होकर रहता है, है निमित्त जो अतिशयवान।।
शंकादि दोषों के कारण, हुआ यदि हो अश्रद्धान।
मिथ्या हो वह दोष पूर्णतः, हृदय जगे मम सम्यक्ज्ञान।।19।।

ॐ ह्रीं धर्मास्तिकायात्यासादनत्यागानुष्ठित प्रोषधोद्योतनेभ्यो अर्घ्यंनिर्वपामीति स्वाहा।

अधर्मास्तिकाय सहायक होता, पुद्गल द्रव्य जीव को खास।
उदासीन होकर के रहता, जितना है सब लोकाकाश।।
शंकादि दोषों के कारण, हुआ यदि हो अश्रद्धान।
मिथ्या हो वह दोष पूर्णतः, हृदय जगे मम सम्यक्ज्ञान।।20।।

ॐ ह्रीं अधर्मास्तिकायात्यासादनत्यागानुष्ठित प्रोषधोद्योतनेभ्यो अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

अस्तिकाय आकाश बताया, सब द्रव्यों का जो आधार।
रहा अनन्तानन्त प्रदेशी, अवगाहन गुण है मनहार।।

शंकादि दोषों के कारण, हुआ यदि हो अश्रद्धान।
मिथ्या हो वह दोष पूर्णतः, हृदय जगे मम सम्यक्ज्ञान।।21।।

ॐ ह्रीं आकाशास्तिकायात्यासादनत्यागानुष्ठित प्रोषधोद्योतनेभ्यो अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

जीव और पुद्गल विशेष हैं, धर्माधर्म और आकाश।
अस्तिकाय यह पाँच बताए, जिनवाणी में अनुपम खास।।
शंकादि दोषों के कारण, हुआ यदि हो अश्रद्धान।
मिथ्या हो वह दोष पूर्णतः, हृदय जगे मम सम्यक्ज्ञान।।22।।

ॐ ह्रीं पंचास्तिकास्यात्यासादनत्यागानुष्ठित प्रोषधोद्योतनेभ्यो अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

(वेसरी छन्द)

सूक्ष्म और स्थूल कहाए, पृथ्वी कायिक जीव बताए।
एकेन्द्रिय के धारी जानो, पृथ्वी ही तन उनका मानो।।
उनको जो बाधा हो जावे, अत्यासादन दोष कहाए।
जिनवर की अर्चा के द्वारा, दोष नाश हो जाए हमारा।।23।।

ॐ ह्रीं पृथ्वीकायिकस्यात्यासादनत्यागानुष्ठित प्रोषधोद्योतनेभ्यो अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

एकेन्द्रिय जलकायिक जानो, स्थूलत्व सूक्ष्म पहिचानो।
जल ही जिनकी देह बताई, ओस बूँद सम आकृति गाई।।
उनको जो बाधा हो जावे, अत्यासादन दोष कहाए।
जिनवर की अर्चा के द्वारा, दोष नाश हो जाए हमारा।।24।।

ॐ ह्रीं जलकायिकस्यात्यासादनत्यागानुष्ठित प्रोषधोद्योतनेभ्यो अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

अग्निकायिक प्राणी गाए, सूक्ष्म और स्थूल बताए।
अग्नि ही तन उनका जानो, सुई की नोकों सम जो मानो।।
उनको जो बाधा हो जावे, अत्यासादन दोष कहाए।
जिनवर की अर्चा के द्वारा, दोष नाश हो जाए हमारा।।25।।

ॐ ह्रीं अग्निकायिकस्यात्यासादनत्यागानुष्ठित प्रोषधोद्योतनेभ्यो अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

वायुकायिक जीव निराले, ध्वज समान जो उड़ने वाले।
सूक्ष्म और स्थूल बताए, एकेन्द्रिय तन वायु पाये।।
उनको जो बाधा हो जावे, अत्यासादन दोष कहाए।
जिनवर की अर्चा के द्वारा, दोष नाश हो जाए हमारा।।26।।

ॐ ह्रीं वायुकायिकस्यात्यासादनत्यागानुष्ठित प्रोषधोद्योतनेभ्यो अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

नित्य इतर साधारण जानो, सूक्ष्म स्थूल भेद पहिचानो।
सप्रतिष्ठित अप्रतिष्ठित भाई, वनस्पति प्रत्येक बताई।।
उनको जो बाधा हो जावे, अत्यासादन दोष कहाए।
जिनवर की अर्चा के द्वारा, दोष नाश हो जाए हमारा।।27।।

ॐ ह्रीं वनस्पतिकायिकस्यात्यासादनत्यागानुष्ठित प्रोषधोद्योतनेभ्यो अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

शंखादि त्रस जीव बताए, दो त्रि चउ पञ्चेन्द्रिय गाए।
जंगम चलने वाले प्राणी, वर्णन करती है जिनवाणी।।
उनको जो बाधा हो जावे, अत्यासादन दोष कहाए।
जिनवर की अर्चा के द्वारा, दोष नाश हो जाए हमारा।।28।।

ॐ ह्रीं त्रसकायिकस्यात्यासादनत्यागानुष्ठित प्रोषधोद्योतनेभ्यो अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

स्थावर जिन पाँच बताए, पाँच भेद त्रस के भी गाए।
पञ्चेन्द्रिय संज्ञी भी जानो, जीव समास अन्य कई मानो।।
उनको जो बाधा हो जावे, अत्यासादन दोष कहाए।
जिनवर की अर्चा के द्वारा, दोष नाश हो जाए हमारा।।29।।

ॐ ह्रीं षड्जीवनिकायस्यात्यासादनत्यागानुष्ठित प्रोषधोद्योतनेभ्यो अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

(चाल-टप्पा)

चेतन युक्त आत्मा भाई, जीव कहा जाए।
जीता था जीता है जीवे, ज्ञान दर्श पाए।।
पदारथ नौ जिन बतलाए....
अत्याशादना दोष नशाने, आज यहाँ आए।।30।।

ॐ ह्रीं जीवपदार्थस्यात्यासादनत्यागानुष्ठित प्रोषधोद्योतनेभ्यो अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

है अजीव चेतन से विरहित, नहीं ज्ञान पाए।
पुद्गल आदि पाँच भेदयुत, जिनवाणी गाए।।
पदारथ नौ जिन बतलाए....
अत्याशादना दोष नशाने, आज यहाँ आए।।31।।

ॐ ह्रीं अजीवपदार्थस्यात्यासादनत्यागानुष्ठित प्रोषधोद्योतनेभ्यो अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

राग-द्वेष भावों के द्वारा, भावास्रव पाए।
द्रव्य कर्म आना द्रव्यास्रव, जिनवर यह गाए।।
पदारथ नौ जिन बतलाए....
अत्याशादना दोष नशाने, आज यहाँ आए।।32।।

ॐ ह्रीं आस्रवपदार्थस्यात्यासादनत्यागानुष्ठित प्रोषधोद्योतनेभ्यो अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

क्षीर नीर सम जीव कर्म का, बन्धन हो जाए।
मिथ्यादि भावों से प्राणी, कर्म बन्ध पाए।।
पदारथ नौ जिन बतलाए....
अत्याशादना दोष नशाने, आज यहाँ आए।।33।।

ॐ ह्रीं बंधपदार्थस्यात्यासादनत्यागानुष्ठित प्रोषधोद्योतनेभ्यो अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

गुप्ति समिति धर्मानुप्रेक्षा, परिषह जय पाए।
इनसे कर्मास्रव रुक जावे, संवर कहलाए।।
पदारथ नौ जिन बतलाए....
अत्याशादना दोष नशाने, आज यहाँ आए।।34।।

ॐ ह्रीं संवरपदार्थस्यात्यासादनत्यागानुष्ठित प्रोषधोद्योतनेभ्यो अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

स विपाक अविपाक निर्जरा, भेद दोय गाए।
हो कर्मांश निर्जरण भाई, तप बल से पाए।।
पदारथ नौ जिन बतलाए....
अत्याशादना दोष नशाने, आज यहाँ आए।।35।।

ॐ ह्रीं निर्जरापदार्थस्यात्यासादनत्यागानुष्ठित प्रोषधोद्योतनेभ्यो अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

द्रव्य भाव कर्मों से मुक्ति, मोक्ष कहा जाए।
कर्म रहित हो ज्ञान शरीरी, शिव सुख जो पाए।।
पदारथ नौ जिन बतलाए....
अत्याशादना दोष नशाने, आज यहाँ आए।।36।।

ॐ ह्रीं मोक्षपदार्थस्यात्यासादनत्यागानुष्ठित प्रोषधोद्योतनेभ्यो अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

रत्नत्रय से भाव श्रेष्ठ शुभ, प्राणी जो पाए।
सातादि के हेतु पावे, पुण्य कहा जाए।।
पदारथ नौ जिन बतलाए....
अत्याशादना दोष नशाने, आज यहाँ आए।।37।।

ॐ ह्रीं पुण्यपदार्थस्यात्यासादनत्यागानुष्ठित प्रोषधोद्योतनेभ्यो अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

अशुभ भाव मिथ्यादि द्वारा, जो प्राणी पाए।
दुख पावे वह भाँति-भाँति के, पाप कहा जाए।।
पदारथ नौ जिन बतलाए....
अत्याशादना दोष नशाने, आज यहाँ आए।।38।।

ॐ ह्रीं पापपदार्थस्यात्यासादनत्यागानुष्ठित प्रोषधोद्योतनेभ्यो अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

जीवादि शुभ सप्त तत्त्व अरु, पुण्य पाप गाए।
सभी मिलाकर नव पदार्थ यह, जिनवर बतलाए।।
पदारथ नौ जिन बतलाए....
अत्याशादना दोष नशाने, आज यहाँ आए।।39।।

ॐ ह्रीं जीवादिनवपदार्थस्यात्यासादनत्यागानुष्ठित प्रोषधोद्योतनेभ्यो अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

जो सत्यार्थ द्रव्य तत्त्वों में, करते हैं प्राणी श्रद्धान।
निश्चय अरु व्यवहार रूप से, सम्यक्दर्शन रहा प्रधान।।
रहा मोक्ष का मूल यही वश, सारे जग में मंगलकार।
सम्यक् श्रद्धा धरकर प्राणी, पाता है निश्चय भव पार।।40।।

ॐ ह्रीं सम्यक्दर्शनस्यात्यासादनत्यागानुष्ठित प्रोषधोद्योतनेभ्यो अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

संशय विभ्रम अरु विमोह से, रहित बताया सम्यक् ज्ञान।
ॐकारमय दिव्य देशना, श्री जिनेन्द्र की रही प्रधान।।
रहा मोक्ष का मूल यही वश, सारे जग में मंगलकार।
सम्यक् श्रद्धा धरकर प्राणी, पाता है निश्चय भव पार।।41।।

ॐ ह्रीं सम्यक्ज्ञानस्यात्यासादनत्यागानुष्ठित प्रोषधोद्योतनेभ्यो अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

पञ्च महाव्रत समिति गुप्तियाँ, तेरह विधि चारित्र महान।
सम्यक् चारित्र धारो प्राणी, अतीचार से रहित प्रधान।।
रहा मोक्ष का मूल यही वश, सारे जग में मंगलकार।
सम्यक् श्रद्धा धरकर प्राणी, पाता है निश्चय भव पार।।42।।

ॐ ह्रीं सम्यक्चारित्रस्यात्यासादनत्यागानुष्ठित प्रोषधोद्योतनेभ्यो अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

सम्यक् दर्शन ज्ञान आचरण, रत्नत्रय है धर्म महान।
भव से मुक्ति देने वाला, तीन लोक में रहा प्रधान।।
रहा मोक्ष का मूल यही वश, सारे जग में मंगलकार।
सम्यक् श्रद्धा धरकर प्राणी, पाता है निश्चय भव पार।।43।।

ॐ ह्रीं सम्यग्दर्शनज्ञानचारित्रेभ्योरत्यासादनत्यागानुष्ठित प्रोषधोद्योतनेभ्यो अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

पञ्च महाव्रत समिति गुप्तियाँ, अस्तिकाय छह जीव निकाय।
नव पदार्थ में अत्याशादना, दोषों से निवृत्ति पाय।।

रहा मोक्ष का मूल यही वश, सारे जग में मंगलकार।
सम्यक् श्रद्धा धरकर प्राणी, पाता है निश्चय भव पार।।44।।

ॐ ह्रीं पंचमहाव्रतअस्तिकायछःजीवनिकायनवपदार्थस्यात्यासादनत्यागानुष्ठित प्रोषधोद्योतनेभ्यो अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

जाप्य मंत्र- ॐ ह्रीं अ सि आ उ सा त्रयस्त्रिंशदत्यासादन त्यागानुष्ठित प्रोषधोद्योतनेभ्यो नमः।

जयमाला

दोहा- जाने या अन्जान में, होते दोष त्रिकाल।
सर्व दोष प्रायश्चित्त की, गाते हम जयमाल।।

(शम्भू छन्द)

नाग नाक नायक निकाय युत, चित्र नेत्र शुभ अतिशयकार।
भूरि शोभा एक शरण जग, समवशरण पावन मनहार।।
भू मण्डल शुभ मण्डित लक्ष्मी, मण्डपयुत मध्यम भू-भाग।
भूषण त्रिपीठाग्र लग्न शुभ, विशिष्ट सिंह विष्टर अनुभाग।।1।।
सिखरी भूत सकल कल्याणी, कल्याण चतुष्टययुक्त प्रभूत।
आर्य वीर्य शोषित विभूति शुभ, प्रातिहार्याष्टक अनुभूत।।
श्रेष्ठ समाराधित द्वादश गण, निरातिशय अतिशय चौंतीस।
सहस्त्ररश्मि से भी अति शोभित, परमौदारिक तन के ईश।।2।।
केवलज्ञान दिवाकर ज्ञानी, नव केवल लब्धि सम्पन्न।
परमातम सुजन हितकारी, भक्त करें भक्ति उत्पन्न।।
सर्व महेन्द्र सुरासुर पूजित, कीर्ति कल्पलता संभूत।
भू भागोपम निरूपम श्री जिन, के मुख कमल से है उद्भूत।।3।।
स्याद्वाद अमृत से गर्भित, परमागम पय पारावार।
रत्न सुरंजित पञ्च महाव्रत, प्रवचन माता अष्टक धार।।

पञ्चास्तिकाय निकाय जीव छह, नव पदार्थ युत सब तैंतीस।
श्रेष्ठ उपाय मोक्ष के इनमें, हो प्रमाद अज्ञान ऋशीष ।।4 ।।
और प्रमोहादि वश कोई, अत्यासादन हो उत्पन्न।
पूर्ण रूप उनसे मुक्ति हो, करते अर्चा हम सम्पन्न ।।
दिव्य महत् यह अर्घ्य समर्पित, करते हैं हम बारम्बार।
भवसागर से मुक्ति पाएँ, मिले विशद शिवपद आधार ।।5 ।।

दोहा- प्रायश्चित्त करके भाव से, करें दोष निर्मूल।
मुक्ति के साधन मिलें, हमको भी अनुकूल ।।

ॐ ह्रीं अ सि आ उ सा त्रयस्त्रिंशदत्याशादन त्यागानुष्ठित प्रोषधोद्योतनेभ्यो जयमाला पूर्णार्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

दोहा- अत्याशादन दोष यह, तैंतीस कहे जिनेश।
प्रायश्चित्त करते हम यहाँ, पाने निज का भेष ।।

(इत्याशीर्वादः पुष्पाञ्जलिं क्षिपेत्)

आरती

तर्ज- आज करें श्री विशदसागर की...

आज करें जिन तीर्थंकर की, आरती अतिशयकारी।
घृत के दीप जलाकर लाए, जिनवर के दरबार ।।
हो भगवन् हम सब उतारें मंगल आरती.....
सोलह कारण भव्य भावना, पूर्व भवों में भाई।
शुभ तीर्थंकर प्रकृति पद में, तीर्थंकर के पाई ।।
हो भगवन् हम सब उतारें मंगल आरती.. ।।1 ।।
मिथ्या कर्म नाशकर क्षायक, सम्यक्दर्शन पाया।
प्रबल पुण्य का योग प्रभु के, शुभ जीवन में आया ।।
हो भगवन् हम सब उतारें मंगल आरती.. ।।2 ।।

गर्भ जन्मकल्याणक आदि, आकर देव मनाते।
केवलज्ञान प्रकट होने पर, समवशरण बनवाते ।।
हो भगवन् हम सब उतारें मंगल आरती.. ।।3 ।।
समवशरण के मध्य प्रभु की, शोभा है मनहारी।
उभय लक्ष्मी से सज्जित है, महिमा अतिशयकारी ।।
हो भगवन् हम सब उतारें मंगल आरती.. ।।4 ।।
सर्व कर्म को नाश प्रभु जी, मोक्ष महल में जाते।
विशद सौख्य में लीन हुए फिर, लौट कभी न आते ।।
हो भगवन् हम सब उतारें मंगल आरती.. ।।5 ।।
तीर्थंकर पद सर्वश्रेष्ठ है, उसको तुमने पाया।
उस पदवी को पाने हेतु, मेरा मन ललचाया ।।
हो भगवन् हम सब उतारें मंगल आरती.. ।।6 ।।
नाथ आपकी आरति करके, उसके फल को पाएँ।
जगत् वास को छोड़ प्रभु जी, मोक्ष महल को पाएँ ।।
हो भगवन् हम सब उतारें मंगल आरती.. ।।7 ।।

प्रशस्ति

है आकाश अनन्तानन्त, जिसका नहीं है कोई अन्त।
जिसके मध्य है लोक महान, ऊर्ध्व अधो में मध्य प्रधान ।।1 ।।
मध्य लोक में जम्बूद्वीप, मेरु जम्बूवृक्ष समीप।
भरत क्षेत्र दक्षिण में श्रेष्ठ, छह खण्डों में बटा यथेष्ट ।।2 ।।
आर्य खण्ड में रहते आर्य, कहते हैं ऐसा आचार्य।
काल अवसर्पिणी रहा विशेष, चौबिस हुए यहाँ तीर्थेश ।।3 ।।
भारत देश का राजस्थान, जिला भीलवाड़ा की शान।
चँवलेश्वर है तीर्थ महान, प्रगटे पार्श्वनाथ भगवान ।।4 ।।
पौष कृष्ण नौमी हर साल, मेला होता यहाँ विशाल।
पच्चिस सौ छत्तिस निर्वाण, सम्वत् बीस सौ पैंसठ जान ।।5 ।।
दो हजार सन् नौ पहिचान, नौ तारीख दिसम्बर जान।